चीनी नववर्ष २०२१ : वृषभ-वर्ष

चीनी राशि चक्र ["शैंगसाओ," जिसका अर्थ है "मिलते-जुलते गुणों से युक्त होकर जन्मा हुआ"] बारह वर्षीय चक्र होता है, जिसकी पुनरावृत्ति होती रहती है। एक पशु हर वर्ष का प्रतीक होता है और ऐसा कहा जाता है कि उस वर्ष में जन्मे लोग इस पशु के गुणों को प्रतिबिम्बित करते हैं।

वर्ष २०२१ में, चीनी नववर्ष १२ फ़रवरी, २०२१ को मनाया जा रहा है जो चीनी राशि चक्र का दूसरा वर्ष है और इसका नाम वृषभ-वर्ष यानी बैल का वर्ष है।

अपने बल और कृषिकार्य में निरन्तर अमूल्य भूमिका निभाने वाले वृषभ की तरह, वृषभ-वर्ष में जन्मे लोगों को विश्वसनीय, बुद्धिमान, परिश्रमी और शान्त स्वभाव का माना जाता है। वे सुव्यवस्थित व उद्यमी होने के साथ-साथ स्वाभाविक रूप से धैर्यवान होते हैं।

"वृषभ मनराज और शब्दों की शक्ति" एक जातक कथा का पुनर्लेखन है जो भगवान बुद्ध के पूर्व के अवतारों की लगभग ५५० कथाओं, किस्सों और लघुकथाओं में से एक है।

वृषभ मनराज और शब्दों की शक्ति

लिन कॉअर्बल द्वारा पुनर्लिखित एक कहानी

बहुत समय पहले की बात है, दक्षिण एशिया के एक हरे-भरे क्षेत्र के एक छोटे-से गाँव में एक मेहनती किसान रहा करता था जिसका नाम था, इलन। अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ, वह कुछ एकड़ जौ की खेती किया करता था, भूमि के छोटे-से टुकड़े पर सब्ज़ियाँ उगाता और खजूर के कुछ बहुमूल्य पेड़ों की देखभाल करता जिसके फल अपनी अतुलनीय मिठास के लिए प्रसिद्ध थे। एक या दो बैलों, कुछ मुर्गियों और कुछ बकरियों की सहायता से वह परिवार अच्छी तरह से अपना जीवन यापन कर रहा था। और जब फसल से आमदनी अच्छी होती तो इलन चाँदी के कुछ सिक्के बचाकर अलग भी रख दिया करता।

वसन्त ऋतु की एक शाम को दिन भर का काम समाप्त करने के बाद इलन आराम कर रहा था, मन ही मन वह आने वाले मौसम के बारे में सोच रहा था। दरवाज़े पर दस्तक सुनकर वह चौंक उठा और अपने ख़यालों से बाहर आया। दरवाज़े पर इस समय कौन हो सकता है? क्या किसी पड़ोसी को मदद की आवश्यकता है?

इलन ने दरवाज़ा खोला तो देखा उसका पुराना दोस्त बशर दरवाज़े पर खड़ा मुस्करा रहा है। “अरे बशर! तुम? आओ, आओ।” इलन ने पूरा दरवाज़ा खोल दिया, परन्तु बशर अब भी बाहर ही खड़ा था और अपने पैरों से सटे, अपने बगल में खड़े, हल्के भूरे रंग के एक छोटे-से बछड़े को देख रहा था।

“बशर, यह किसका बछड़ा है?” इलन ने पूछा।

“इलन मेरे दोस्त,” बशर ने कहा, “कई साल पहले तुमने मेरी सहायता की थी; जब मैं बीमार था और काम नहीं कर पा रहा था तब तुमने अपने घर से मेरे परिवार को खाना दिया था। मैं यह कभी नहीं भूला। इस साल, बसन्त में हमारे बैलों के झुण्ड में हमेशा से कुछ ज़्यादा बछड़े पैदा हुए हैं। यह छोटा बछड़ा जो कुछ महीने पहले भोर के समय पैदा हुआ था, उसके माथे पर एक अनोखा निशान है। यह निशान सुबह-सुबह के सूरज जैसा लगता है।”

इलन निशान देखने के लिए घुटनों के बल बैठा और जब उसने बछड़े की हल्के भूरे रंग की खाल को सहलाने के लिए हाथ बढ़ाया तो उसकी नज़रें उस बछड़े की नज़रों से टकरा गईं। वास्तव में उस बछड़े की भौहों के बीच हल्के रंग के बालों का एक हिस्सा था जो उगते हुए सूर्य जैसा दिख रहा था। इलन बछड़े की पीठ सहलाते हुए मुस्कराया। वह बछड़ा इलन की आँखों में देखता रहा। बशर ने आगे कहा, “मेरे दोस्त, हम लोग शुक्रिया अदा करने का तरीक़ा ढूँढ़ रहे थे। अगर तुम इस बछड़े को तोहफ़े के रूप में स्वीकार कर लो तो यह हमारे लिए बहुत सम्मान की बात होगी।”

इलन जब उस बछड़े को सहला रहा था, तो वह कोमल-सा जीव इलन के नज़दीक आ गया और अपनी नाक को इलन की ठोड़ी के नीचे लगाने लगा। इलन को अपने हृदय में प्रेम उमड़ता हुआ महसूस हुआ और वह मुस्कराया।

इलन ऊपर अपने मित्र की ओर देखकर मुस्कराया। “शुक्रिया बशर। यह बिल्कुल सही समय पर आया है। हमारा एक बैल बूढ़ा हो रहा है और वह अधिक समय तक खेत नहीं जोत पाएगा। मैं इसी बारे में सोच रहा था कि तुमने दरवाज़े पर दस्तक दी। तुम्हारा तोहफ़ा एक रहमत के रूप में आया है।”

उसी समय इलन ने उस बछड़े का नाम रखा, ‘मनराज’, जिसका अर्थ है ‘मन पर राज करने वाला।’

न बशर को और न ही इलन को इस बात का पता था, और न ही उन्होंने कल्पना की थी कि वह बछड़ा जिसके सिर पर आशीर्वाद का यह निशान था, वह एक ज्ञानी बोधिसत्त्व था जो सबके उत्थान के लिए कार्य करने हेतु एक बैल के रूप में अवतरित हुआ था।

इलन मनराज की देखभाल में पूरी तरह लग गया, वह इस बछड़े को सबसे अच्छा चारा खिलाता; उसने पुराने गिरे हुए छप्पर की मरम्मत करवाई ताकि ख़राब मौसम में भी मनराज वहाँ सुरक्षित रह सके।

धीरे-धीरे और बड़ी ही मृदुलता से, उस किसान ने बैल को प्रशिक्षित किया, उसे जुए में जोत दिया और थोड़ा-थोड़ा करके वह भार बढ़ाता गया। मनराज की बढ़ती ताक़त के सामने, पेड़ों के तनों और चट्टानों का भी कोई मुकाबला नहीं था। दिए गए निर्देशों को वह बैल जल्द ही सीख लेता और बेझिझक उन्हें पूरा करता। वह जो खेत जोतता था, उनकी पक्तियाँ सीधी और समतल होतीं—इलन को ज़्यादा कुछ बताना नहीं पड़ता।

मनराज का आगमन खेतों के काम के लिए बहुमूल्य साबित होने लगा—वह हमेशा दृढ़ व सन्तुलित रहता, फिर चाहे मौसम कैसा भी हो, कार्य कोई भी हो। वर्ष बीतते गए, फसल में बढ़ोतरी होती गई और इलन के चाँदी के सिक्कों का भण्डार भी बढ़ता गया।

परन्तु, एक समय ऐसा भी आया जब इलन के भाग्य ने करवट बदली। अकाल पड़ गया और लगातार तीन वर्ष तक फसलें कम हुईं। इलन की बचत का भण्डार बिल्कुल समाप्त हो गया और चिन्ताग्रस्त इलन अपने परिवार का पेट पालने के लिए संघर्ष करने लगा। वह सोचता—शुक्र है, खजूर का बगीचा तो है जो अब भी बाज़ार में बेचने के लिए फल दे रहा है।

मनराज ने देखा कि इलन इस मुश्किल समय के दौरान उसके कन्धों पर जुआ जोतते समय बेचैन रहता है और अक्सर अपने परिवार से चिढ़चिढ़ाकर बात करता है।

एक रात सोते-सोते मनराज सोचने लगा कि वह किस प्रकार इस किसान की मदद करे।

अगली सुबह जब इलन मनराज के छप्पर में गया और उसने मनराज के सिर को सहलाया, तो मनराज ने उसकी ओर देखते हुए धीमे-से कहा, “राम राम, किसान इलन जी।”

इलन भौचक्का रहा गया! “मनराज! तुम बोलते हो!”

मनराज ने धीरे-से अपना बड़ा-सा सिर हिलाया, “जी हाँ। और मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।”

इलन मन्त्रमुग्ध-सा हो गया, विस्मय से फैली आँखों से उसने मनराज की तरफ़ देखा और सुनने के लिए वह आगे झुका।

“आपने मुझे इतना अच्छा जीवन दिया है और मेरा इतना ध्यान रखा है। जब सूरज की तेज़ धूप से मेरी पीठ गर्म होती है तो आप इस पर ध्यान देते हैं और मुझे नदी पर ले जाते हैं। जब किसी दिन काम बहुत ज़्यादा होता है और मैं थक जाता हूँ, आप मुझे अधिक चारा देते हैं और जब सर्दियों में

चरने जाना कठिन होता है तो आप मुझे मेरा पसन्दीदा अनाज लाकर देते हैं। हालाँकि मैं एक बैल हूँ, फिर भी आप मेरे साथ कितनी दयालुता का बरताव करते हैं।

“मैं जानता हूँ कि अकाल के कारण मुश्किल हो रही है; मैं आपकी व आपके परिवार की सहायता करना चाहता हूँ। मेरे पास एक युक्ति है।”

चकित हुआ इलन, यह समझने का प्रयास कर रहा था कि हो क्या रहा है और वह क्या सुन रहा है।

“कैसी युक्ति?” इलन ने पूछा और ध्यान से सुनने लगा।

मनराज ने आगे कहा, “आज दोपहर को आप नगर जाइए और धनी व्यापारी, मुफ़द को ढूँढ़िए। उसे मेरी ताक़त पर शर्त लगाने में दिलचस्पी हो सकती है। यदि हो, तो यह बाज़ी लगाइए कि मैं उसके जौ के खेत में तीन टन का भार खींचूँगा। आप अपने क़ीमती खजूर के बाग़ की बाज़ी लगाइएगा, और वह पाँच सौ चाँदी के सिक्कों की बाज़ी लगाए।”

यह सुनकर, इलन घबराकर पीछे हट गया, “तुम बहुत ताक़तवर हो मनराज—परन्तु मैं अपने लिए तुम्हें ऐसा दुष्कर कार्य करने की इजाज़त नहीं दे सकता और न ही मैं अपने खजूर के बाग़ को जोखिम में डाल सकता हूँ। मेरे पास बस वही बाकी है। अगर मैं हार गया—मैं सब कुछ गँवा दूँगा और मेरे परिवार की हालत बद से बदतर हो जाएगी।”

“किसान इलन, मैं कर सकता हूँ,” मनराज ने आश्वासन देते हुए सौम्यता से कहा। अचम्भित-सा इलन मनराज की आँखों में देख रहा था। मनराज के माथे पर, उगते हुए सूरज का निशान अचानक सजीव दिखने लगा, उसकी किरणें इलन को बल व भरोसा दे रही थीं।

इलन को भी आश्चर्य हो रहा था कि वह हाँ में अपना सिर हिला रहा है और मनराज की युक्ति के लिए सहमति दे रहा है।

एक नए आत्मविश्वास के साथ इलन शीघ्र ही सुबह के कार्य समाप्त करके नगर की ओर निकल पड़ा। वहाँ जाकर उसने मुफ़द व्यापारी के लिए पूछा।

“महाशय,” इलन ने बात शुरू की, “मुझे लगता है कि यदि मैं आपके सामने एक शर्त रखूँ तो शायद आपको उसमें दिलचस्पी हो।”

मुफ़द, इलन की ओर मुड़ा, उसने इलन को ऊपर से नीचे तक देखा और सोचने लगा कि इस किसान के दिमाग़ में क्या चल रहा है।

“अच्छा, तुम्हारा प्रस्ताव क्या है?” व्यापारी ने पूछताछ की।

“मेरे पास एक बैल है, वह इतना ताक़तवर है कि वह तीन टन का भार खींच सकता है। मेरा दावा यह है कि वह आपके जौ के खेत में यह भार खींचेगा। आपको पाँच सौ चाँदी के सिक्कों की बाज़ी लगानी होगी, और मैं अपने खजूर के बाग़ की बाज़ी लगाऊँगा।”

मुफ़द ने अविश्वास जताते हुए अपना सिर पीछे किया और वह हँसने लगा। “यह नामुमकिन है! कोई भी बैल—चाहे वह कितना भी ताक़तवर क्यों न हो—इतना भार नहीं खींच सकता! परन्तु तुम्हारे खजूर के पेड़ों से मेरी फसल में अच्छी-खासी बढ़ोतरी होगी। मुझे यह शर्त मंज़ूर है।”

उन्होंने तय किया कि वे तीन दिन बाद खेत पर मिलेंगे।

बिना समय गँवाए, मुफ़द ने गाँव में ढिंढोरा पिटवा दिया और गाँववालों से कहा कि वे अपनी-अपनी ज़मीन पर पड़े, बड़े-बड़े पत्थर इकट्ठा करके उसके खेत में ले आएँ। वहाँ, मुफ़द का कर्मचारी बाट की मदद से भार को तोलेगा। दो दिन के अन्दर, मनराज के आने की तैयारी में एक तख़्ते पर मिट्टी, पेड़ के तने और कंकड़-पत्थरों का ढेर लगा दिया गया और उसे एक जुए से बाँध दिया गया।

तीसरे दिन सुबह-सुबह, इलन और मनराज खेत पर पहुँच गए। इतने सारे भार और वहाँ इकट्ठा लोगों को देखकर इलन का मुँह सूख गया। इलन का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए मनराज ने अपने नथुनों से ज़ोर-से साँस छोड़ी; वह इलन को आश्वासन देना चाहता था। पर इलन की नज़रें झुकी हुई थीं, उसके मन में बेचैनी और दुविधा थी।

“आह, राम राम, इलन!” मुफ़द ने इलन का मज़ाक़ उड़ाते हुए उसके सामने पाँच सौ चाँदी के सिक्कों की पोटली खनकाई। बड़े ही नाटकीय ढंग से उसने दाँव लगाने के लिए तैयार की गई मेज़ पर सिक्के रख दिए। उनके बगल में उसने जान-बूझकर वह करार नामा रखा जिसमें यह बात लिखी थी इलन अपने खजूर के पेड़ उसके नाम कर रहा है।

“क्या यही तुम्हारा बैल है?”

“हाँ,” इलन ने जवाब दिया और घबराते हुए उस काग़ज़ पर अँगूठा लगाया।

मन में बढ़ती आशंका के साथ इलन मनराज पर जुआ जोतने के लिए मुड़ा।

अब वह क्षण आ गया जब मनराज को भार खींचना था। इलन डरा हुआ था, उसने एक व्यग्र और कर्कश आवाज़ में आदेश दिया, *“खींचो! अभी!”* और फिर उसने ज़ोर-से और रूखेपन से कहा, *“खींचो!”*

मनराज अपनी जगह से ज़रा भी नहीं हिला, वह लगातार सामने की ओर देख रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उसके पैर पेड़ों के समान धरती में जमे हुए हों।

इलन और भी व्याकुल हो गया और अड़ गया, “तुम चल क्यों नहीं रहे हो? क्या तुम निकम्मे बैल हो गए हो?!” मनराज भावशून्य-सा खड़ा, टस से मस न हुआ।

कुछ समय बाद, वहाँ इकट्ठा लोग भी, बैल और इलन, दोनों का मज़ाक़ उड़ाने लगे और ताने कसने लगे।

तुरन्त ही, व्यापारी ने ताल ठोंकते हुए यह ऐलान किया, “मुझे तो पहले ही पता था कि यह असम्भव है! तुम कितने बड़े बेवकूफ़ हो।” उसने किसान की पीठ थपथपाई और पाँच सौ चाँदी के सिक्कों की पोटली अपनी जेब में डाली, और साथ ही वह करार नामा भी उठा लिया जिसमें यह लिखा था कि इलन का क़ीमती खजूर का बाग़ भी अब उसका हो चुका है। एक ही पल में इलन ने अपने परिवार की आख़िरी उम्मीद भी खो दी।

इलन ने दुःखी मन से मनराज के कन्धों पर से जुआ हटाया और दोनों भारी क़दमों से अपने खेत की ओर चल दिए। जब वे इतनी दूर निकल गए कि उन्हें कोई भी गाँववाला सुन नहीं सकता था तब इलन मनराज की ओर मुड़ा। वह सुन्न हो चुका था, उसकी उम्मीद टूट गई थी। उसने मनराज से पूछा, “क्या हुआ? तुमने मुझसे वादा किया था कि तुम यह कर सकते हो! अब मेरे पास अपने परिवार का पेट पालने के लिए कुछ भी नहीं बचा!”

मनराज सड़क के बीचोबीच रुक गया और धीमे स्वर में बोला, “मैं उस बोझे को खींचने ही वाला था कि आपने अपनी चिन्ता के कारण मुझसे ऊँची आवाज़ में बात की और वे कठोर शब्द कहे। मेरा दिल ऐसी दयाहीनता का प्रत्युत्तर न दे सका। कठोर शब्द कोमल से कोमल हृदय को भी पत्थर बना देते हैं। बोझा खींचने का मेरा मन ही नहीं हुआ।”

इलन ने मनराज की आँखों में देखा, “ओह, मनराज, मुझे माफ़ कर दो। मैं डर गया था इसलिए मैंने तुमसे कड़ाई से बात की। मुझे माफ़ कर दो। तुमने अपना सब कुछ मुझे और मेरे परिवार को दिया है।” इलन का कोमल हृदय ग्लानि से भर गया।

“चिन्ता मत कीजिए,” मनराज ने कहा। “मेरे पास एक और युक्ति है।” दोनों चलते रहे और मनराज ने एक नई युक्ति बताई जिसका पता अगले दिन चलने वाला था।

अगले दिन सुबह, इलन और मनराज वापस नगर पहुँचे और मुफ़द के पास गए जो अभी अपनी दुकान खोल ही रहा था।

“क्यों इलन, सुबह-सुबह यहाँ! उधार चाहिए क्या?”

“नहीं, नहीं मुफ़द, बल्कि मैं तो एक और शर्त लगाने आया हूँ। आज। पर इस बार भार खींचने के लिए दो हज़ार चाँदी के सिक्के लूँगा। अगर आप जीते तो मैं अपने पूरे खेत के काग़ज़ आपके नाम कर दूँगा। अगर मैं शर्त जीता तो आप मुझे चाँदी के सिक्के देंगे और मेरे खजूर के बाग़ के काग़ज़ात भी लौटा देंगे।”

व्यापारी को इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ और वह हँसने लगा। “मैंने जितना सोचा था, तुम तो उससे भी ज़्यादा बेवकूफ़ हो! बाँधो अपने बैल को और शुरू करते हैं!”

जब इलन मनराज के कन्धों पर जुआ रख रहा था तब व्यापारी ने दो हज़ार चाँदी के सिक्के मेज़ पर रख दिए जो सूरज की रोशनी में चमचमा रहे थे। गाँव में यह बात आग की तरह फैल गई कि दोबारा शर्त लगी है; लोग इकट्ठा होने लगे।

“चलो किसान, शुरू करो!” मुफ़द ने ऐलान किया और अपना हाथ जोश में ऊपर उठाया। “हम सब दूसरा तमाशा देखने का इन्तज़ार कर रहे हैं!” इलन का जिगरी दोस्त बशर भी भीड़ में था, आगे-पीछे चहल-क़दमी कर रहा था और सोच रहा था कि आख़िर उसके दोस्त को हो क्या गया है। कहीं वह पागल तो नहीं हो गया है?

इलन के चेहरे पर दृढ़ता के भाव थे, वह प्यार-से मनराज के बगल में गया और उसके कान में बुदबुदाया : “तुम ताक़तवर हो, हिम्मती हो, दृढ़निश्चयी हो, और मेरे मनराज, तुममें तो इससे कहीं अधिक बोझा उठाने की क्षमता है! तुम यह कर सकते हो! तुम सर्वश्रेष्ठ बैल हो! आराम से करो। जब तुम तैयार हो तब खींचो।”

मनराज ने अपना सिर झुकाया, अपने कन्धे रस्से में मज़बूती से फँसाए और फिर पूरी ताक़त के साथ अपने आगे के खुर से ज़ोर लगाया। जब मनराज ने एक क़दम आगे बढ़ाया और फिर दूसरा, तो उसकी चमकती हुई सारी माँसपेशियाँ फूली हुई दिखाई दे रही थीं और बोझे से लदा तख़्ता एक-एक इंच करके खेत में आगे बढ़ने लगा। वहाँ इकट्ठा हुए लोगों का मुँह खुला का खुला रह गया। इलन, मनराज के साथ-साथ चलता रहा, उसका हौसला बढ़ाता रहा और धीरे-धीरे तीन टन के बोझ से लदे उस तख़्ते को खींचने की मनराज की गति बढ़ती गई। गाँववालों को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था।

जब मनराज खेत के दूसरे छोर तक पहुँच गया तो लोग उत्साह और खुशी से, ज़ोर-शोर से हँसने और चिल्लाने लगे। बशर ने अपनी टोपी ज़ोर-से ऊपर हवा में उछाल दी और जीत की खुशी में ताली बजाई।

मुफ़द ने अविश्वास से अपना सिर हिलाया, चाँदी के सिक्कों को एक थैले में डाला और इलन को थमा दिया। “तुम साफ़-साफ़ जीत गए हो,” मन में ईर्ष्या भरे सम्मान का भाव लिए उसने स्वीकार किया और इलन को उसके खजूर के बाग़ के काग़ज़ात भी लौटा दिए।

मनराज की गर्दन पर चाँदी के सिक्कों का थैला लटकाकर, मनराज और इलन घर की ओर चल दिए। अपने प्यारे बैल के नज़दीक जाते हुए, इलन ने उसकी चौड़ी पीठ पर हाथ रखा और पूछा, “मनराज, तुमने यह किया कैसे?”

मनराज ने उत्तर दिया, “प्यारे किसान इलन, शब्दों में बहुत शक्ति होती है। जब आपने दयाभाव से मुझसे बात की और मेरा हौसला बढ़ाते रहे, तो वह बोझा जो मैं खींच रहा था, पंख जैसा हल्का हो गया। दयालुता भरे शब्द आत्मा के अदम्य प्रेम को जगा देते हैं और वे चमत्कार कर सकते हैं।”

ये शब्द सुनकर, इलन को महसूस हुआ, एक जाना-पहचाना-सा प्रेम जो सूर्योदय की किरणों की तरह उसके हृदय में प्रसरित हो रहा था।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।